Toppersnotes
Unleash the topper in you

DRDO-MTS

डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट ऑर्गनाइज़ेशन

भारत का इतिहास एवं संस्कृति

SIERRA
INNOVATIONS

विषय सूची

प्राचीन इतिहास

1. सिन्धुघाटी सभ्यता 1

2. वैदिक काल 10

3. ऋग्वैदिक काल 15

4. उत्तरवैदिक काल 19

5. बौद्ध धर्म 21

6. जैन धर्म 27

7. भागवत धर्म, शैव धर्म, शाक्त धर्म 33

8. 16 महाजनपद काल 35

9. विदेशी आक्रमण 39

10. मौर्य वंश 41

11. मौर्योत्तर काल 54

12. गुप्त वंश 61

13. मंदिर स्थापत्य कला 87

मध्यकालीन इतिहास

1. इस्लाम 89

2. तुर्क आक्रमण 90

3. मोहम्मद गौरी 92
4. भारत पर अरब आक्रमण 93
5. सल्तनत काल 94
6. मुगलकाल 118
7. विजयनगर साम्राज्य 150
8. बहमनी साम्राज्य 156
9. सूफीवाद 158
10. भक्ति आन्दोलन 163
11. ऋषि आन्दोलन 165
12. सिख धर्म 166
13. मराठा 170

आधुनिक इतिहास

1. भारत में यूरोपीयन शक्तियों का आगमन 172
2. उत्तरकालीन मुगल सम्राट 180
3. बंगाल 184
4. मराठा शक्ति का उत्कर्ष 187
5. लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि 196
6. अंग्रेजों की भू-राजस्व पद्धतियाँ 197

7. अंग्रेजों के न्यायिक सुधार 199
8. भारत में लोक सेवा का विकास 200
9. मैसूर 201
10. पंजाब 203
11. गवर्नर जनरल 207
12. भारत के गवर्नर जनरल 211
13. भारत के वायसराय 217
14. 1857 की क्रांति 225
15. सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन 232
16. राष्ट्रीय आंदोलन 240
17. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 242
18. 1909 का भारत परिषद् अधिनियम/मार्ले मिन्टो सुधार 247
19. गांधी युग 249
20. 1919 का भारत सरकार अधिनियम 252
/मोण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार
21. भारत सरकार अधिनियम 1935 260
22. भारत में क्रांतिकारी आंदोलन 267
23. विदेशों में क्रांतिकारी आंदोलन 269
24. प्रमुख व्यक्तित्व 272
25. भारत का संवैधानिक विकास 274

Toppersnotes
Unleash the topper in you

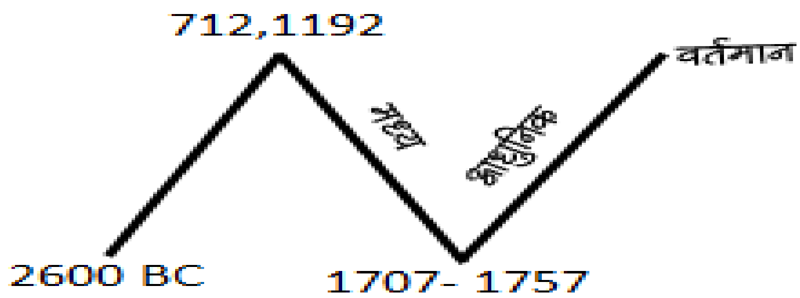

कालक्रम

1. 2600 BC – 1900 BC सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900 BC – 1500 BC ------------
3. 1500 BC – 1000 BC ऋग्वैदिक काल
4. 1000 BC – 600 BC उत्तरवैदिक काल
5. 600 BC – 321 BC महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321 BC – 184 BC मौर्य काल
7. 184 BC – 321 AD मौर्योत्तर काल
8. 319 AD – 550 AD गुप्तकाल
9. 606 AD – 647 AD हर्षवर्द्धन
10. 750 AD – 1000 AD राजपूत काल
11. 1192 (1206) – 1526 AD सल्तनत काल
12. 1526 AD – 1707 (1858) मुगल काल
13. 1707 (1757) – वर्तमान आधुनिक काल

प्राचीन काल में भारत

सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे "हड़प्पा सभ्यता" भी कहा जाता है ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।
- चार्ल्स मेसन – 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन – 1856 ई हड़प्पा नगर का सर्वे किया ।
- सर जॉन मार्शल (ASI – महानिदेशक) – 1921 ई पूर्व
  इन्होने दयाराम साहनी को हड़प्पा मे उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया ।
- कालक्रम – 2600 से 1900 B.C. (New Ncert) | रेडियो कार्बन (C^{14})
  2250 से 1750 B.C. (Old Ncert)
- <u>विस्तार</u> –

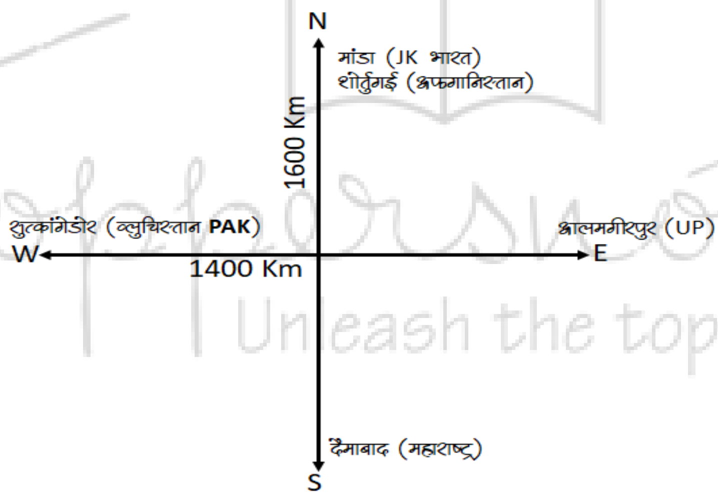

- पिग्गट ने हड़प्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- धोलावीरा एवं राखीगढी भारत में सबसे पुरातन स्थल है ।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान मे चले गये ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हड़प्पा
  मोहनजोदडों

<u>नगर नियोजन</u> –

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था
  सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती हैं ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार – 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकडी की नालियों के साक्ष्य मिलते हैं ।
- नगर 2 भागों मे बाँटा हुआ होता था । पहला भाग – दुर्गीकृत होता था (शासक वर्ग) तथा दूसरा भाग सामान्य । (मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि)

- **<u>राजनीतिक व्यवस्थाः</u> –**
  ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी --- ।

- **<u>आर्थिक व्यवस्था</u> –**

<u>कृषि</u>

- खेती व्यवस्था – प्रमुख कार्य
- कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले हैं ।
  एक साथ दो – दो फसल बोने के साक्ष्य मिले हैं (कालीबंगा)
- गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
- उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते हैं । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
- सिंचाई (कुँओ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी ।
- नहरों के साक्ष्य भी मिलते है – शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
- धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले हैं । सम्भवतः नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
- अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते हैं।

Toppersnotes Unleash the topper in you

पशुपालन

- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरो पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती है ।

उद्योग

- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते हैं । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- लकडी के कारखाने भी थे ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे ।

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)

- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते है ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती हैं ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती है । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, यौनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी – जैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थितिः –

- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागों मे विभाजित था –
  - (i) पुरोहित वर्ग
  - (ii) व्यापारी वर्ग
  - (iii) किसान वर्ग
  - (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्रा मे मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।

- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा मे हथियार मिलते हैं ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था -
    - (i) पूर्ण शवाधान
    - (ii) आंशिक शवाधान
    - (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे ।
- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापार: -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल हैं ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है ।
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरे: -

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई है।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदडों व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती हैं।
- (II) कूबड वाला सांड के चित्र

1. हडप्पा: -

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब - शाहीवाल जिले मे)
रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता - दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है। एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते हैं।
- यहाँ से इक्का गाडी प्राप्त होती है। (पश्चिम मे विशाल दुर्ग)
- शृंगार पेटी प्राप्त होती है।
- टीले पर निर्मित - व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा।

2. मोहनजोदडो : -

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी

- मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार -

(a) आकार :- 39×23×8 ft
(b) इसके उत्तर व दक्षिण मे सीढियाँ बनी हुई है।
(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है।

(d) इसके उत्तर दिशा मे 6 वस्त्र बदलने के कक्ष है ।
(e) तीन तरफ बरामदे है ।
(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए है ।
(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
(h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते है ।
(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे ।
(j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?
(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है ।
(a) यह नग्न है ।
(b) इसने एक हाथ मे चूडियाँ पहन रखी है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है ।
(a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

3. <u>लोथल</u> :-

स्थिति = गुजरात

- भोगवा नदी के किनारे

उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)

→ यह एक व्यापारिक नगर था ।

(i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है ।
(a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
(ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
(iii) चावल के साक्ष्य
(iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है ।
(v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
(vi) चक्की के दो पाट
(vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
(viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

Toppersnotes Unleash the topper in you

4. <u>सुरकोटडा / सुरकोटदा</u>: -

स्थिति = गुजरात

(i) घोडे की हड्डियाँ

- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. <u>कुनाल (HR)</u>

- चाँदी के दो मुकुट

6. <u>रोजदी (गुजरात)</u>

- हाथी के साक्ष्य

7. <u>रोपड (PB)</u>

मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

8. धौलावीरा

गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)

उत्खननकर्त्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)

- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया ।
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते हैं । (खेल का मैदान)
- सिंधु लिपि के 10 बडे चिह्नों से निर्मित शिलालेख

9. चन्हुदडों

उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके

- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य मिले ।
- वक्राकार ईंटे मिली है ।

10. दैमाबाद

- रथ मिले है ।

<u>हडप्पा लिपि</u>

- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था

- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- एक लेख पर सर्वाधिक 16 शब्द व भावों का प्रयोग किया गया है ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल - बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन
- जॉन मार्शल-प्रशासनिक शिथिलता

निष्कर्ष

हड़प्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रहीं । अंततः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक साहित्य का अंग नहीं है।

वेद –

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया।
- वेदों की रचना आर्यो ने की।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था।
- वेद 4 है –

1. ऋग्वेद –

- ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है।
- पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है।
- दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है।
- तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है।
  - गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की।
  - गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है।
- सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है।

  भरत कबीला V/S 10 कबीले

  राजा = सुदास

  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था।

- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम भुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. <u>यजुर्वेद :-</u>
- यह 2 भागों में है - (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को "अध्वर्यु" कहा जाता है ।
- यज्ञ - अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद - धनुर्वेद

3. <u>सामवेद</u> : -
- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते है ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. <u>अथर्ववेद :-</u>
- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि - रचयिता
- अन्य नाम - अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने - टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय - औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र - मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला - ब्रह्म
- उपवेद - शिल्पवेद ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद – 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद – 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तैतरेय ब्राह्मण

सामवेद – 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य -

- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये ।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य –

- इनकी संख्या 108 है ।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है ।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है ।
- विषयवस्तु – रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् –

1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है
   इसमे कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है ।

2. छान्दोग्य उपनिषद् –
   - इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है ।
   - भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है ।
   - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है ।

3. वृहदारण्यक उपनिषद् –
   - सबसे लम्बा उपनिषद्
   - इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है ।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4. <u>जाबाल उपनिषद्</u> –
   - चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है ।

5. <u>ऐतरेय उपनिषद्</u> –
   बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

6. <u>मुण्डकोपनिषद्</u> –
   "सत्यमेव जयते"

वेद — कर्म मार्ग – जेमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण — प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

आरण्यक — ज्ञान मार्ग – बादरायण – उत्तर मीमांसा दर्शन
उपनिषद् — ब्रह्मसूत्र

- शंकराचार्य – अद्वैत
- रामानुज – विशिष्ट अद्वैत
- निम्बार्काचार्य – द्वैत – अद्वैत
- वल्लभाचार्य – शुद्ध अद्वैत
- माध्वाचार्य – द्वैत

<u>वेदांग</u>
1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरूक्त
6. कल्प

<u>शुल्वसूत्र</u>
- इसमें यज्ञ वेदिकाओं को नापने का उल्लेख
- गणित व रेखागणित का प्रथम ग्रन्थ

<u>पुराण</u> – संख्या – 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया ।
- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
  इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख

Toppersnotes
Unleash the topper in you

- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है।
  "बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- शुंग व सातवाहन वंश के समय इसकी रचना हुई।

टीकाकार = भारूची
कुल्लक भट्ट
मेधातिथी
गोविन्दराज

याज्ञवल्क्य स्मृतिः – टीकाकार = विश्वरूप
विज्ञानेश्वर
अपरार्क

नारदस्मृतिः – इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है।

कात्यायनः – इसमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
(1500 - 1000BC)	(1000 - 600BC)

ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 BC)

- आर्य का शाब्दिक अर्थ - भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
- आर्यो का निवास स्थान -

(i) बाल गंगाधर तिलक - "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज"

"गीता रहस्य"

आर्यिऑन / ऑर्योन

(पुस्तके)

इस पुस्तक मे उत्तरी ध्रुव को आर्यो का निवास स्थान बताया।

(ii) दयानन्द सरस्वती - तिब्बत को आर्यो का स्थान बताया।

(iii) डॉ. पेन्का - जर्मनी को बताया।

(iv) मेक्स म्युलर - मध्य एशिया - बैक्ट्रिया
सर्वाधिक मान्य मत

आर्यो का भौगोलिक विस्तार :-

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 - 1 बार "मुजवन्त"
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख - जो कि हिमालय है।
- सोम का निवास स्थान - भुजवन्त
- पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है।
  झेलम - वितस्ता, चिनाब - असिकनी, सतलज - सतुद्री, व्यास - बिपाशा, रावी - पुरूषणी
- अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख

आर्यो की राजनैतिक स्थिति :-

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी।
- अधिकतर लडाईयाँ जानवरों (गायों व घोडा) के लिए लडी जाती थी।

Toppersnotes Unleash the topper in you